बाइबल टीचर

वर्ष 17 फरवरी 2020 अंक 3

सम्पादकीय

फूट का पाप

धार्मिक तौर पर आज मसीहीयत बहुत बंटी हुई है। आज लोग मसीह में विश्वास तो करते हैं परन्तु आपस में बटें हुए हैं। बहुत सारे लोग यीशु में विश्वास करने वाले अपने आपको कैथलिक कहते हैंजिसका अर्थ है विश्वव्यापी और बहुत सारे कहते हैं हम प्रोटैस्टन्ट है यानि वे कैथलिक के विरोधी हैं क्योंकि हिन्दी में प्रोटैस्टन्ट का अर्थ है विरोधी। आज बहुत सारे चर्च अर्थात कलीसियाएं संसार में देखी जाती है तथा इनके नाम तथा काम सब कुछ बाइबल अनुसार नहीं हैं। अपनी बाइबल को पढ़िए तथा खोजिये कि कैथलिक चर्च कहां हैं? या फिर देखिए कि बैपटिस्ट, लूथरन, मैथोडिस्ट, असैम्बली ऑफ गॉड़, मारमन, पैन्टोकॉस्टल इत्यादि कहां लिखा है? इन सब कलीसियाओं के बनाने वाले आम मनुष्य थे जिन्होंने विभिन्न शिक्षाओं को अपना आधार बनाकर इन साम्प्रदायों को शुरू किया था।

यह सब आपस में बटें हुए हैं तथा इन सब में फूट का पाप हैं तथा इन सबकी अपनी विभिन्न शिक्षाएं हैं और अलग-अलग आराधना करने के तरीके हैं। सब प्रयत्न तो कर रहे हैं कि हम सब में एकता हो जाए परन्तु सब बाइबल को आधार मानकर नहीं चलना चाहते। विभिन्न धार्मिक अगुओं ने यह प्रयास तो किया था कि हम में एकता हो परन्तु ऐसा होना उनके लिये संभव नहीं हो सका क्योंकि कोई भी अपनी अनुचित शिक्षा को छोड़ना नहीं चाहता। जब तक हम बाइबल को आधार मानकर नहीं चलेंगे तब तक एकता नहीं आ सकती। कोई भी चर्च का लीडर अपने अनुचित नाम, शिक्षा विधियों को छोड़ना नहीं चाहता। हां, एकता अवश्य आ सकती है यदि हम सब बाइबल को अपना मापदण्ड तथा तराजु मानकर चले।

हमारा परमेश्वर फूट तथा झगड़े से घृणा करता है। परमेश्वर ने अपने वचन में उसके विषय में कहा था कि कुरिन्थि में कलीसिया में फूट हो रही थी उसने कहा था, प्रेरित पौलुस के द्वारा और उनकी निंदा की थी कि जो तुम कर रहे हो वो गलत है। पौलुस कहता है, "हे भाईयों मैं तुम से यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है उसके नाम के द्वारा बिनती करता हूं कि तुम सब एक ही बात कहो; और तुम मैं फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो। क्योंकि हे मेरे भाइयों, खलोए के घराने के लोगों ने मुझे तुम्हारे विषय में बताया है कि तुम मैं झगड़े हो रहे हैं। मेरा कहना यह है कि तुम में से कोई तो अपने को पौलुस का और अपुल्लौस का कोई कैफा का और कोई मसीह का कहता है। क्या मसीह बंट गया? क्या पौलुस तुम्हारे लिये क्रूस पर

चढ़ाया गया? या तुम्हें पौलुस के नाम पर बपतिस्मा मिला? मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि क्रिस्पुस और गयुन्स को छोड़ मैंने तुम में से किसी को भी बपतिस्मा नहीं दिया। कहीं ऐसा न हो कि कोई कहे कि तुम्हें मेरे नाम पर बपतिस्मा मिला। और मैंने स्तिफ़नास के घराने को भी बपतिस्मा दिया, इनको छोड़ मैं नहीं जानता कि मैंने और किसी को बपतिस्मा दिया। क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने को नहीं वरन सुसमाचार सुनाने को भेजा है, और यह भी शब्दों के ज्ञान अनुसार नहीं, ऐसा न हो कि मसीह का क्रूस व्यर्थ ठहरे। (1 कुरि. 1:10-17)।

पौलुस उन लोगों से कह रहा था, जो फूट डाल रहे थे कि क्या मसीह बंट गया? क्या पौलुस तुम्हारे लिये क्रूस पर चढ़ाया गया? और फिर वह उनसे पूछता है कि क्या तुमने पौलुस के नाम पर बपतिस्मा लिया? किसी भी प्रश्न का उत्तर उनके पास नहीं था। इसलिये जो लोग कलीसिया में फूट पैदा करते हैं उन्हें यह समझना चाहिए कि उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन परमेश्वर को दिया तथा यीशु के साथ वे उसकी सेवा करने में समर्पित हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि सब विश्वासी मसीह में एक हो। यदि दो जमा दो चार होते हैं तो सब को इस बात से सहमत होना चाहिए। यदि कोई कहता है नहीं, दो जमा दो तीन या पांच होते हैं तो यह गलत है।

यदि सब मसीह में एक होना चाहते हैं तो सबको एक ही बात कहनी चाहिए। पौलुस कुरिन्थ में कहता है कि उसका काम बपतिस्मा देना नहीं बल्कि उसे सुसमाचार प्रचार का कार्य सौंपा गया है। आज हमारे पास एक ही सुसमाचार है यानि यीशु मसीह मारा गया, गाड़ा गया और तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा। यह एक खुशी की खबर है। (1 कुरि. 15:1-4) आज सबको इसी सुसमाचार को प्रचार करना है।

आज लोग नये नियम की शिक्षाओं को छोड़कर अपनी अपनी शिक्षाएं दे रहे हैं। बाइबल एक कलीसिया के विषय में बताती है जिसे यीशु ने बनाया था। (मत्ती 16:18)। एक ही देह है, एक ही प्रभु है तथा एक ही बपतिस्मा है। (इफि 4:4-6)। हमें नये नियम की खरी शिक्षा को सुनकर सच्चे नये नियम अनुसार मसीही बनना है। आप न्याय के दिन मसीह के न्याय आसन के सामने एक कैथलिक, बैपटिस्ट या मैथोडिक्ट के रूप में खड़े होंगे या एक मसीही के रूप में खड़े होंगे? न्याय के दिन शायद आपको यह शब्द सुनने पड़े "मैं तुम्हें नहीं जानता" (मत्ती 7:21-23)

प्रेरित पौलुस ने लोगों से कहा था, "अब हे भाईयों मैं तुम से बिनती करता हूं कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुमने पाई है, फूट पड़ने और ठोकर खाने के कारण होते है, उन्हें ताड़ लिया करो; और उनसे दूर रहो। क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते हैं; और चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे सादे मन के लोगों को बहका देते हैं। हमें ऐसे लोगों से दूर रहना चाहिए। कई ऐसे प्रचारक हैं जो लोगों को ऐसी बातें सिखाते हैं जिनका वर्णन बाइबल में नहीं मिलता। कई पैसा मांगते हैं तथा झूठे वायदे करते हैं, कई तेल की शीशी बेचते हैं और कहते हैं "कि यह तेल लगाने से आपकी बीमारी दूर हो जायेगी कई और ऐसे भी हैं जो आपसे कहेंगे कि दसवां अंश दो ताकि आपको बहुतायत से आशिष मिले। आपको ऐसे लोगों से दूर रहना चाहिए। बहुत से प्रचारक जिन्हें हम झूठे प्रचारक कहते हैं यीशु के नाम में झूठी बातें कह सकते हैं इसलिये बाइबल कहती है "धोखा न खाओ" (गलतियों 6:7)।

सब कहते है तो हैं कि हम बाइबल को सिखा रहे हैं परन्तु वे बाइबल को नहीं सिखा रहे हैं। वे खुद भी धोखे में है तथा लोगों को भी धोखा दे रहे हैं।

आज यदि मसीहीयत में लोग एक होना चाहते हैं तो हमें बाइबल की तरफ मुड़ना पड़ेगा। यीशु मन से चाहता था कि उसमें विश्वास करने वाले लोग सब एकता में होकर रहें। यीशु ने इसके लिये प्रार्थना भी की थी तथा उसने अपनी प्रार्थना में कहा था, "मैं केवल इन्हीं के लिये बिनती नहीं करता, परन्तु उनके लिये भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हो। जैसा हे पिता तू मुझ में है, और मैं तुम में हूं, वैसे ही वे भी हम में हो, इसलिये कि जगत प्रतीति करे कि तू ही ने मुझे भेजा है।" (यूहन्ना 17:20, 21)। यहां यीशु अपने 12 चेलों के लिये प्रार्थना कर रहा था परन्तु उनके लिये भी जो उनके प्रचार के द्वारा उसके पास आयेगे। वह कहता है कि मुझ में विश्वास करने वाले लोग एक होंगे। यदि सब विश्वास करने वाले लोग एकता में रहेंगे और केवल मसीही नाम से जाने जायेंगे वे सब एक होंगे। यह सच्ची एकता होगी।

अब कई बार मसीही लोग मसीह की कलीसिया में फूट पैदा कर देते हैं। कई स्थानों पर देखा जाता है कि लोगों के गलत व्यावहार के कारण कलीसिया में फूट हो जाती है। पौलुस ने मसीहीयों से कहा था कि "सो मैं जो प्रभु में बंधुआ हू" तुम से बिनती करता हूं कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो। अर्थात सारी दीनता और नम्रता सहित और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो। और मेल के बंध में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो। एक ही देह है और एक ही आत्मा जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है। एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास एक ही बपतिस्मा और सबका एक ही परमेश्वर और पिता है जो सबके ऊपर और सब के मध्य में, और सब में है।" (इफि. 4:1-6)। यहां हम देखते हैं कि सब कुछ एक ही है। बहुत सारी कलीसियाएं जो विभिन्न नामों और शिक्षाओं से जानी जाती है एक नहीं है। कलीसिया जो बाइबल को अपना आधार तथा मापदण्ड मानती है वह बाइबल की कलीसिया है जो मसीह की कलीसिया के नाम से जानी जाती है।

मित्रो! परमेश्वर ने हमें केवल एक पुस्तक दी है। यह पुस्तक बाइबल है और यह हमें बताती है कि हम एकता में कैसे रह सकते हैं? यदि सब इसे पढ़कर एक ही बात को मानें तो मसीहीयों में एकता आ सकती है। प्रभु यीशु ने जब अपनी एक कलीसिया की स्थापना की थी तो उसने हमें अपने वचन में बताया था कि इसमें प्रवेश कैसे किया जाता है। हमें प्रभु यीशु में विश्वास करके तथा तमाम बुराईयों से मन फिराकर जल रूपी कब्र में बपतिस्मा लेना है तब प्रभु हमें अपनी कलीसिया में मिलाता है। (मरकुस 16:16; मत्ती 10:32-33, लूका 13:3 तथा प्रेरितों 2:38)। ऐसा करके हम केवल एक ही कलीसिया में मिलाये जायेगें तथा केवल एक ही नाम से जाने जायेंगे अर्थात मसीही नाम। (प्रेरितों 11:26; 1 पतरस 4:16)। केवल एक ही शिक्षा को मानेंगे क्योंकि हमारे विश्वास का केवल एक ही आधार होगा। हमारा उद्धार का मार्ग एक होगा, एक ही कलीसिया, एक ही नाम और एक ही विश्वास होगा। एक ही प्रकार की आराधना होगी। जब हम एकता में रहेंगे और तब एक ही बात कहेंगे। बाइबल हमें एकता के

बंधन में बांध देगी। प्रभु यीशु ने एकता के लिये प्रार्थना की थी। वह नहीं चाहता कि उसके लोगों में फूट हो। वह फूट से घृणा करता है। वह चाहता है कि सब मसीही लोग एकता में रहें।

यदि आप किसी स्थानीय कलीसिया के सदस्य है। तब आपकी यह जिम्मेवारी है कि आप कलीसिया की एकता को बनाकर रखें और सत्य से प्रेम रखें तथा कलीसिया में कोई ऐसा विवाद न होने दे जिससे कलीसिया की शांति भंग हो। प्रेरित पौलुस ने कहा था कि, "सो मैं जो प्रभु में बंधुआ हूं तुम से बिनती करता हूं, कि जिस बुलाहट से बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो। अर्थात सारी दीनता और नम्रता सहित और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो और मेल के बंधन में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो।" (इफिसियों 4:1-3)। अब मसीहीयों को चाहिए कि प्रेम में सच्चाई से चलते हुए, सब बातों में जो सिर है अर्थात मसीह में बढ़ते जायें (इफि. 4:15)।

पाप और उससे छुटकारा

सनी डेविड

पाप संसार में मनुष्य की सबसे बड़ी समस्या है। संसार के किसी भी शहर में छपने वाले समाचार पत्र को यदि हम उठाकर देखें तो सबसे पहिले हमारी दृष्टि किसी न किसी अपराध के समाचार पर पड़ेगी। संसार में ऐसा कोई स्थान नहीं है जहां लोग हों और वह स्थान पाप-मुक्त हो। जहां कहीं भी हम चले जाएं अपराध तथा बुराई के साए हमें नहीं छोड़ते। और यहां तक कि बुराई को देखने के हम इस सीमा तक आदि हो चुके हैं, कि बहुत सी बातें जो वास्तव में पाप हैं, हमें उन में कोई बुराई नजर नहीं आती, हम उन्हें स्वाभाविक या आधुनिक कहकर, नजरअंदाज कर देते हैं। परन्तु सुनिए, पाप हमारे नगरों में है, हमारे गांवों, कस्बों और बस्तियों में है। पाप हमारे मुहल्लों में है, हमारे परिवारों में है, और हमारे जीवनों में है। जब हम यात्रा करते हैं तो हम पाप को देखते हैं, जब हम लोगों के बीच में बैठते हैं तो हमें बुराई दीख पड़ती है, और जब हम अपने उपर दृष्टि डालते हैं तो अपने आपको पाप के कोढ़ से भरा हुआ पाते हैं। इस में कोई संदेह नहीं कि "यदि हम कहें, कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं: और हम में सत्य नहीं।" (1 यूहन्ना 1:8)।

प्रभु यीशु ने कहा, "कि जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास है।" (यूहन्ना 8:34)। और जबकि सबने पाप किया है, (रोमियों 3:23), इसलिये प्रत्येक मनुष्य पाप का दास है। यह एक सच्चाई है, और इससे इंकार नहीं किया जा सकता। परन्तु मनुष्य किस तरह से पाप का दास बनता है? पवित्र शास्त्र का लेखक कहता है, "प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खींचकर और फंसकर परीक्षा में पड़ता है। फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है, और पाप जब बढ़ जाता हैं तो मृत्यु को

उत्पन्न करता है।" (याकूब 1:14, 15)। यहां इस बात पर ध्यान दें, कि हरएक मनुष्य अपनी ही अभिलाषा से खिंचता है, अर्थात अभिलाषा में एक ऐसा खींचाव होता है, एक ऐसी कशिश होती है, जो मनुष्य को अपनी ओर खींचती है, और धीरे-धीरे मनुष्य उसकी ओर खिंचकर उनके भीतर फंस जाता है, यहां मनुष्य भारी परीक्षा में पड़ता है जिस में से निकलना उसके लिये बड़ा कठिन हो जाता है। फिर अभिलाषा गर्भवती होती है, अर्थात कार्यशील होती है। और मनुष्य पाप कर बैठता है। फिर, उसमें से एकदम निकलकर वह पश्चाताप नहीं करता, मन नहीं फिराता, परन्तु पाप उसमें बढ़ता जाता है, और इस प्रकार मनुष्य अनन्त मृत्यु की फसल काटता है।

क्या आप ने कभी इस बात पर विचार किया है कि मछली किस प्रकार शिकारी के कांटे में फंसकर नाश होती है? बिल्कुल ऐसे ही, जैसे मनुष्य पाप के भीतर फंसकर नाश होता है। एक शिकारी मछली पकड़ने जाता है, उसके पास डोर और बंसी होती है जिसके एक सिरे पर एक कांटा लगा होता है। उस कांटे में वह शिकारी एक ऐसी वस्तु फंसाता है जिसे देखकर उस मछली के मुंह में पानी आ जाए और उसके भीतर उसे प्राप्त करने की अभिलाषा जगृत हो जाए। अब वह शिकारी उसे पानी में डाल देता है और बैठकर अपने शिकार की प्रतिक्षा करता है। कुछ ही देर में एक मछली आती है, वह उस चाहने योग्य वस्तु को देखकर उसे प्राप्त करने की लालसा करने लगती है, उसकी अभिलाषा उसे खींचने लगती हैं और वह धीरे-धीरे उसकी ओर खिंचने लगती है। जैसे-जैसे वह उसके निकट आने लगती है वह उस वस्तु के सौंदर्य के जाल में फंसने लगती है। किन्तु अब उससे नहीं रहा जाता, सो वह उस पर झपट पड़ती है परन्तु शीघ्र ही उसे पता चलता है कि वह एक कांटे में फंस चुकी है, अब वह उसमें से निकलने के लिये छटपटाती है- किन्तु अब बहुत देर हो चुकी है- वह सदा के लिये उसमें फंस जाती है, और नाश हो जाती हैं। क्या यह आज संसार में प्रत्येक मनुष्य का एक वास्तविक चित्र नहीं है?

मनुष्य पाप का दास है, वह अपना जीवन पाप में बिता रहा है। परन्तु उसके भीतर मनुष्य ने स्वयं अपने आपको फंसा रखा है, उसने पाप को दावत दी है कि वह आकर उसके भीतर राज करे, ठीक ऐसे ही जैसे कि वह उदाहरण में आपको देने जा रहा हूं। यह कहानी इस प्रकार है, एक बार एक अरब सौदागर था, वह अपने ऊंट पर सवार होकर किसी देश में व्यापार के लिये जा रहा था। मार्ग में जब रात हुई, तो सौदागार ने अपना तम्बू खड़ा करके उसके भीतर रात बिताने का निश्चय किया। उसने ऊंट को बाहर तम्बु के पास ही बांध दिया और स्वयं भीतर जाकर विश्राम करने लगा। लगभग आधी रात का समय था, कि सौदागार को एक आवाज सुनाई पड़ी, यह आवाज उसके ऊंट की थी, जो कह रहा था, "मालिक बाहर, बड़े जोर की ठंड पड़ रही है, यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं अपना मुंह तम्बू के भीतर कर लूं?" सौदागर ने कहा, "हां, हां ठीक है, कर लो, इसमें क्या बात है। सौदागर यह कहकर सो गया। परन्तु अभी उसकी नींद गहरी थी न हुई थी, कि एकाएक उसे ऊंट की आवाज फिर सुनाई दी। इस बार वह कह रहा था, "मालिक ठंड बढ़ती ही चली जा रही है, आज्ञा दें तो मैं अपना एक अगला पैरा भी अंदर कर लूं?" सौदागर ने कहा, "अच्छा भई ठीक है, कर लो।" यह कहकर वह फिर सोने का प्रयत्न करने लगा। परन्तु अभी उसने एक झपकी ही ली थी,

कि उसे ऊंट की आवाज फिर तीसरी बार सुनाई पड़ी। ऊंट कह रहा था, "साहब, ठंड ने तो आज कमाल कर दिया, मालिक एक बिनती और है, मुझे आज्ञा दें तो मैं अपना दूसरा अगला पैर भी तम्बू के भीतर कर लूं?" सौदागर ने उत्तर देकर कहा, "अच्छा ठीक है, वह भी कर लो, कोई बात नहीं।" कहानी को लम्बा न करके, अन्त में यूं हुआ, कि सूरज अभी निकला भी न था, कि धीरे-धीरे पूरा ऊंट तम्बू के भीतर आ खड़ा हुआ। कुछ देर बाद, जब सौदागर को कुछ दुर्गंध और घुटन सी महसूस होने लगी, तो उसने ऊंट की उपस्थिति का अनुभव किया। उसने ऊंट से कहा, बाहर चले जाओ, इस छोटे से तम्बू में इतनी जगह नहीं है। परन्तु ऊंट ने सौदागर को उत्तर देकर कहा, यदि आपको बुरा लग रहा है तो आप कृपा करके बाहर चले जाए। कितने ही लोग आज इसी तरह पाप की दलदल में धंस चुके हैं, वे निकलना भी चाहते हैं तो निकल नहीं पाते, क्योंकि पाप के पंजे बड़े ही शक्तिशाली होते है।

और इसीलिये प्रभु यीशु ने कहा, "कि जो कोई पाप करता है वह पाप का दास है।" परन्तु फिर, प्रभु ने यह भी कहा, कि "सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।" (यूहन्ना 8:32)। मनुष्य को पाप के सत्य के सिवाय और कोई स्वतंत्र नहीं करा सकता। और वह सत्य है, यीशु मसीह। उसने कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना 14:6)। इसीलिये पवित्र बाइबल का लेखक कहता है, "सो अब जो मसीह यीशु में है, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं" (रोमियों 8:1)। अर्थात वे अंधकार के वश से छुड़ाए जाकर ज्योति में प्रवेश कर चुके हैं।

प्रभु यीशु ने मनुष्य को पाप से मुक्त कराने के लिये अपने जीवन को बलिदान कर दिया और उसके विषय में पवित्र शास्त्र यूं कहता है, "जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, ओर दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आपको दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां क्रूस की मृत्यु भी सह ली।" (फिलिप्पियों 2:6-8)। वह आदि में परमेश्वर के साथ था, उसी के द्वारा सब कुछ उत्पन्न हुआ, (यूहन्ना 1:1-3), परन्तु मनुष्य को पाप से छुटकारा दिलाने के लिये वह स्वर्ग छोड़कर मनुष्यों के बीच में आ गया। उसने, और केवल उसी ने, एक सिद्ध जीवन व्यतीत किया। उसने कहा, मैं पापियों का उद्धार करने के लिये आया हूं। (लूका 19:10)।

परमेश्वर ने उसे इसीलिये भेजा था कि वह संसार में सारे मनुष्यों के लिये उनके पापों के निमित्त एक सिद्ध बलिदान ठहरे। परमेश्वर की मनसा थी कि वह एक क्रूस के उपर लटकाकर मार डाला जाए ताकि सब लोगों के लिये एक प्रायश्चित ठहरे। और जब समय पूरा हुआ, तो उसके शत्रुओं ने उसे पकड़ा ताकि वे उसे दोषी ठहराकर मार डालें। वे उसे अदालत में ले गए, और उस पर झूठे दोष लगाए ताकि उसे मृत्यु दण्ड दिया जाए। परन्तु अदालत के हाकिम ने उसमें कोई भी दोष न पाया और वह उसे छोड़ देना चाहता था। (यूहन्ना 18:38) परन्तु वास्तव में, यीशु परमेश्वर की ओर से दोषी ठहराया जा चुका था। वह हमारे पापों के लिये दोषी था। परमेश्वर ने मनुष्य को पाप से मुक्त कराने के लिये यीशु को मनुष्य के पापों के लिये जिम्मेदार ठहराया था, और

हमारे पापों के लिये उसे दोषी ठहराकर उसने उसे क्रूस की मृत्यु के हवाले कर दिया था। सो प्रेरित कहता है, "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।" (2 कुरि. 5:21) परमेश्वर की मनसा के अनुसार यीशु क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला गया। अपनी मृत्यु के समय यीशु ने कहा था, "पूरा हुआ।" अर्थात मनुष्य के उद्धार के जिस काम को करने के लिये वह पृथ्वी पर आया था वह उसने क्रूस पर अपनी दर्दनाक मृत्यु के द्वारा पूरा किया।

परन्तु तीसरे दिन जब यीशु मुर्दों में से जी उठा, तो उसने प्रमाणित कर दिया कि वह एक मरा हुआ नहीं परन्तु एक जीवता उद्धारकर्ता है। जब वह स्वर्ग में वापस जा रहा था तो उसने अपने चेलों से कहा, "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस 16: 15, 16)। क्या आप यीशु की आज्ञा मानकर अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करना न चाहेंगे? यीशु ने अपने लोहू की कीमत देकर आपके छुटकारे का दाम भर दिया है। यदि आप उसमें विश्वास करेंगे और अपने पापों की क्षमा के लिये उसकी आज्ञा का पालन करेंगे, तो वह आपको पाप के वश से छुड़ाकर आजाद करेगा।

परमेश्वर सच्चे उपासक चाहता है

जे. सी. चोट

जब से परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की है वह तब से अब तक ऐसे लोगों से प्रसन्न होता हैं जो उसके सच्चे उपासक है। वह चाहता है कि लोग दिखावा और ढोंग छोड़कर सच्चे और अच्छे मन से उसकी आराधना करें। मनुष्य को परमेश्वर ने बुद्धि दी है और वह जानता है कि सच्चाई से उपासना करने का क्या अर्थ है? मनुष्य चुनाव कर सकता है कि किस प्रकार से उपासना करे। परमेश्वर मनुष्य पर दबाव भी डाल सकता था कि वह उसकी उपासना करे परन्तु यह आराधना उसके लिये अर्थहीन होती। आज भी मनुष्य के पास यह चुनाव है। आज बहुत सारे लोग उसकी आराधना नहीं करते और यदि करते भी हैं तो उसकी आज्ञानुसार नहीं करते। यह इस प्रकार से होता है जैसे कई बच्चे अपने माता-पिता का ध्यान नहीं करते। हमें परमेश्वर ने बनाया है और हम उसकी सृष्टि है। उसने हमें आशीषित किया है। हम उससे दूर भी चले जाये तब भी वह हमें आशीषित करता है तथा हमारी रक्षा करता हैं यह कितनी अच्छी बात है कि कई बार हम उससे दूर हो जाते हैं तब भी वह हमारी सहायता करता है।

यूहन्ना की पुस्तक के चार अध्याय में हम एक सामरी स्त्री के विषय में पढ़ते है। यहां यीशु कुएं पर बैठी हुई एक सामरी स्त्री से बात कर रहा है। जब उनकी बातचीत चल ही रही थी, तभी उसने यह अंदाजा लगा लिया कि यीशु एक भविष्यदूक्ता है। तब

उसने बातचीत आरंभ करते हुए कहा, "हे प्रभु मुझे लगता है कि तू एक भविष्यदूक्ता है। हमारे बाप-दादों ने इसी पहाड़ पर भजन किया, और तुम कहते हो कि वह जगह जहां भजन करना चाहिए यरूशलेम में है। यीशु ने उससे कहा, हे नारी मेरी बात की प्रतीति कर कि वह समय आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता का भजन करोगे न यरूशलेम में। तुम जिसे नहीं जानते, उसका भजन करते हो; क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है। परन्तु वह समय आता है, वरन अब भी है जिसमें सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे। क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही भजन करने वालों को ढूढ़ता है। परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन, करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें। स्त्री ने उससे कहा, मैं जानती हूं कि मसीह जो क्रिस्तुस कहलाता है, आने वाला है; जब वह आएगा, तो हमें सब बता देगा। यीशु ने उससे कहा, मैं जो तुझ से बोल रहा हूं वही हूं।" (यूहन्ना 4:19-26)।

यहां एक उदाहरण हम देखते हैं कि सामरी लोग इकट्ठा होकर किस प्रकार से आराधना करते थे परन्तु वे लोग परमेश्वर के मार्ग से भटक गये थे। यहूदी लोग यह बात जानते थे कि सच्ची उपासना यरूशलेम में होनी थी। परन्तु विशेष ध्यान देने योग्य बात यह थी कि उनकी उपासना रीति-रिवाजों पर आधारित थी। परन्तु यह बातें जल्द ही बदलने वाली थी। यीशु ने कहाथा कि पिता परमेश्वर सच्चे भक्तों या उपासकों को ढूढ़ रहा है। ऐसे उपासक जो आत्मा और सच्चाई से उसकी उपासना करेंगे। जिस प्रकार से यहूदी लोग उपासना करते थे वह पूरी तरह से रीति रिवाज थे तथा मसीही युग के साथ आत्मा और सच्चाई से उपासना शुरू होने वाली थी। इस उपासना को वहां सब स्थानों पर किया जायेगा जहां मसीही लोग पाये जायेंगे। इस बात पर ध्यान दीजिये कि यीशु ने कहा था कि परमेश्वर आत्मा है। उसे हम किसी भी मूरत और सूरत में नहीं बदल सकते। संसार में जहां कहां भी उसके लोग होंगे वे आत्मा और सच्चाई से उसकी उपासना करेंगे।

परमेश्वर चाहता है कि लोग उसकी उपासना करे परन्तु किसी दबाव से नहीं। उसे आदर दें तथा मन से उसकी भक्ति करें। उसकी उपासना आत्मा और सच्चाई से करने का अर्थ है उसके वचन अनुसार आराधना करना। आराधना में जो कुछ भी हम करते हैं वो अपने को प्रसन्न करने के लिये नहीं करते।

आज संसार में लोग विभिन्न तरीकों से उपासना करते हैं। यीशु ने कहा था कि कई लोग व्यर्थ में उपासना करते हैं क्योंकि मनुष्यों की शिक्षाओं को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं। (मत्ती 15:8-9)। प्रेरित पौलुस ने कहा था कि अथेने में कुछ लोग अंजाने ईश्वर की उपासना कर रहे थे। (प्रेरितों 17:23)। कुछ लोग आज अपनी स्वयं की भावनाओं पर आधारित होकर उपासना करते हैं। कई लोग जैसा उन्हें पसंद है वैसे उपासना करते हैं। हमें यह देखना चाहिए कि परमेश्वर को क्या पसंद है? हमें तो बहुत सारी बातें अच्छी लगती है, परन्तु यह देखना चाहिए कि क्या परमेश्वर उसे पसंद करेगा? हमें परमेश्वर की उपासना उसकी इच्छानुसार करनी चाहिए।

बाइबल हमें बताती है कि चेले आराधना के लिये सप्ताह के पहिले दिन एकत्रित होते थे। जैसे कि लिखा है "सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिये इकट्ठे हुए तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उनसे बातें की और आधी रात तक

बातें करता रहा।" (प्रेरितों 20:7)। हम यह भी पढ़ते हैं कि इस दिन लोग प्रभु भोज लेते थे। जैसे कि 1 कुरि. 11:23-29 में लिखा है। वे इस दिन वचन सुनने के लिये इकट्ठे होते थे। बाइबल स्टेडी करते थे। (2 तीमु. 2:15 और यूहन्ना 5:39)। वे यानि मसीही लोग चन्दा देते थे। (1 कुरि. 16:1-2)। जैसा जिसने अपने मन में ठाना है उसे अपने चंदे को देना चाहिए। बाइबल कहती है कि चंदा खुशी से देना चाहिए क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देने वाले से प्रसन्न होता है। (2 कुरि. 9:6)। वे लोग आराधना में मसीही भजन और गीत गाते थे। वह कहता है कि अपने-अपने मन में संगीत बजाओ और मन तथा समझ के साथ गीतों को गाओ। (इफि. 5:19)। मन में संगीत बजाने का अर्थ है बिना बाजों के भजन गाना।

क्योंकि हम मसीही लोग नये नियम अनुसार चलते हैं इसलिये नये नियम में आत्मिक गीतों के साथ कहीं भी बाजे बजाने की बात नहीं लिखी है। इस बात को याद रखिये कि हमें आत्मा और सच्चाई में होकर आराधना करना- अर्थात परमेश्वर की इच्छा अनुसार इसलिये मसीही लोग अपने गले की आवाजों को बुलन्द करके गाते हैं। हम गीतों को समझकर गाते हैं कि गाने का अर्थ क्या हैं? पौलुस ने कहा था मैं आत्मा के साथ और समझ के साथ गाऊंगा और प्रार्थना भी समझ के साथ करूंगा। (1 कुरि. 14:15)। और फिर हम देखते हैं कि अपनी आराधना में हम प्रार्थना करते हैं। प्रेरितों 2:42 में हम पढ़ते हैं, "और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलिन रहे।" इसलिये हम देखते हैं कि सच्चे मसीही किस प्रकार से सप्ताह के पहिले दिन यानि सन्डे के दिन उपासना करते हैं। याद रखिये यीशु ने कहा था कि परमेश्वर सच्चे उपासकों को स्वीकार करता है। उसे बनावटी उपासक नहीं चाहिए। यदि आपने विश्वास करके और मन फिराकर बपतिस्मा लिया है तो एक सच्चे उपासक बनकर उसकी आराधना कीजिये।

क्या परमेश्वर की उपासना में बाद्यसंगीत का उपयोग एक उद्धार का विषय है?

अबन बी. मोसले

क्या परमेश्वर की उपासना में बाद्यसंगीत का उपयोग एक "उद्धार" का विषय है? हां है। मैं ऐसा क्यों कहता हूं, "हां है"? क्योंकि बाइबल यह शिक्षा देती है कि हर बात जो पाप है वह उद्धार का विषय है। आगे ऐसा लिखा है कि हर वह बात जो बगैर विश्वास के है वह पाप है। रोमियों की पत्री में प्रेरित पौलुस वर्णन करते हैं, "परन्तु जो संदेह करके खाता है वह दण्ड के योग्य ठहर चुका, क्योंकि वह विश्वास से नहीं खाता, और जो कुछ विश्वास से नहीं वह पाप है।" (रोमियों 14:23)।

पौलुस रोमियों 10:17 में लिखते हैं कि, "अत: विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है।"

क्या कोई दण्ड कर यह बता सकता है कि परमेश्वर के वचन में बाद्य संगीत का उपयोग करने का अधिकार या उनको इस्तेमाल करने की सहमती या इस प्रकार कोई

आदेश कहीं है? कुछ लोग इस विषय पर यह तर्क देते हैं कि यद्यपि बाइबल नये नियम में यह कहीं नहीं कहती कि उपासना में वाद्य संगीत का उपयोग करना चाहिए परन्तु पुराने नियम में परमेश्वर की उपासना में वाद्य यंत्र न केवल उपयोग किये गए थे पर उनके उपयोग करने की आज्ञा भी दी गई थी। इसलिये लोग वाद-विवाद करते हैं और प्रमाणित करते हैं कि परमेश्वर के वचन में वाद्य यंत्रों के उपयोग का वर्णन है।

हम लोगों को बहुत सतर्क रहने की आवश्यकता है, जब हम पुराने नियम से ऐसी शिक्षाओं और उधारणों की सफाई देकर अपना पक्ष सही ठहराने का प्रयास करते हैं। पुराने नियम में बहुत सी शिक्षाएं और सिद्धांत ऐसे हैं जो आज भी हम पर लागू होते हैं। और कुछ ऐसे भी हैं जो लागू नहीं होते। हमें बड़ी सर्तकता बरतनी चाहिए शिक्षाओं और सिद्धांतों का चयन करने में पहिले कि आज वह लागू है या नहीं।

पुराने नियम में एक शिक्षा और सिद्धांत ऐसा दिया हुआ है जिसका संबंध मैं विश्वास से कह सकता हूं परमेश्वर की उपासना में वाद्य यंत्रों के उपयोग करने से है। मैं समझता हूं यह शिक्षा और सिद्धांत काफी इस पर सोचने के लिये विवश कर देता है। जब इस्राएली लोग मिस्त्र देश से निकलकर प्रतिज्ञा किए हुए देश के सफर पर निकले तो उन लोगों ने अकसर अपनी शारीरिक इच्छाओं को अपने निर्णय लेने की क्षमता के ऊपर रखा। (हममें से बहुत आज भी ऐसा करते हैं) यहोवा ने इस्राएलियों को बहुत सी आशीषें दी थी परन्तु वह पूरे सफर भर हमेशा बक-बक करते, बुडबुड़ाते वाद-विवाद करते और यहोवा की परीक्षा करते रहे।

हम ऐसी दो घटनाओं के बारे में देखेंगे जहां परमेश्वर ने मूसा से चट्टान से पानी निकालने की आज्ञा दी।

पहली घटना का वर्णन हमें निर्गमन की पुस्तक उसके 17:1-6 में मिलता है। दूसरी घटना का वर्णन गिनती की पुस्तक उसके 20:2-3 में मिलता है।

इन दोनों घटनाओं में कुछ विशेष बातें है जिन पर विचार करेंगे।

पहली दफा मूसा ने जब चट्टान से पानी निकाला उस समय यहोवा ने मूसा से कहा अपनी लाठी ले, होरब पहाड़ की चट्आन के पास जा और लाठी को उस चट्टान पर मारना तब उसमें से पानी निकलने लगेगा। मूसा ने सुना; मूसा ने विश्वास किया; मूसा ने आज्ञा का पालन किया और यहोवा के वायदे के अनुसार पानी निकलने लगा करीब इस घटना के चालीस वर्ष बाद दूसरी घटना में मूसा ने चट्आन से पानी निकाला (गिनती 20:1)।

पहली घटना के बाद उस समय के बहुत से इस्राएली यहोवा की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास न करने के कारण मर चुके थे। (गिनती 14:1)।

स्पष्ट तौर से प्रकट होता है कि इस्राएलियों की नई पीढ़ी भी पहली पीढ़ी की तरह ही थी। माता-पिता का अपनी संतानों पर प्रभाव तो था तो भी कोई लाभ देखने में नहीं आता था।

यहोवा ने मूसा से कहा अपनी लाठी ले, मण्डली को इकट्ठा कर और चट्टान से बातें कर (गिनती 20:8)।

मूसा ने लाठी ली; मण्डली को इकट्ठा किया, चट्टान के पास गया और बजाए चट्टान से बातें करने के उसने उस पर लाठी से दो बार मारी (गिनती 20:9-11)। मूसा

ने सुना; मूसा ने विश्वास नहीं किया मूसा ने आज्ञा का उल्लंघन किया। जैसी यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी उसने वैसा नहीं किया। आज्ञा न मानने के अपराध की वजह से मूसा इस्राएलियों को प्रतिज्ञा किये हुए देश में न ले जा सका।

मोआब देश में मूसा की मृत्यु हो गई (व्यवस्थाविवरण 32:48-52; 34:1)।

किस प्रकार इन दोनों घटनाओं का संबंध उपासना में बाद्य संगीत के उपयोग के प्रश्न से है?

चट्टानों से पानी निकालने की यह दो घटनाएं आज हमें बहुत ही महत्वपूर्ण और मूल्यवान शिक्षा प्रदान करती है, हमें परमेश्वर की इच्छा को मानना चाहिए जैसे और जब उसने जो भी अधिकार दिया है।

बाइबल का अध्ययन सामान्य तौर से करने से भी साफ पता चलता है कि परमेश्वर क्या चाहता है, उसकी क्या इच्छा है और वह इसको कभी भी बदल सकता है। यह बात इन दो चट्टानों से पानी के निकाले जाने के उधारण से बिलकुल स्पष्ट हो जाती है।

इस बात पर गौर करें कि परमेश्वर ने दूसरी बार मूसा द्वारा चट्टान से पानी निकालने की आज्ञा को पहली दफा की चट्टान से पानी निकालने की आज्ञा से बिल्कुल बदल दिया। परमेश्वर ने इस बात को नजरअंदाज नहीं किया कि मूसा ने इस समय दी गई आज्ञा का उल्लंघन किया है। इस व्यवहार के लिये मूसा द्वारा विश्वास न रखने और आज्ञा न मानने के कारण सजा भुगतनी पड़ी। वह प्रतिज्ञा किए हुए कनान देश में प्रवेश न कर सका।

यह दो घटनाएं उन लोगों के लिये क्या संदेश देती हैं जो इस तत्व ज्ञान का तर्क देते हें, "कि बाद्य संगीत के प्रयोग का अधिकार नये नियम में परमेश्वर की उपासना के लिये न दिया गया हो परन्तु पुराने नियम में तो इसका प्रयोग हुआ है, इसलिये हम इसे नये नियम में भी प्रयोग कर सकते हैं"?

दोनों अवसरों पर परमेश्वर ने विशेष तौर पर मूसा को स्पष्ट आज्ञाएं दीं और परमेश्वर चाहता था कि उनका हूबहू वैसे ही पालन किया जाए। परमेश्वर ने मूसा को नई आज्ञाओं का उल्लंघन करने के कारण उसको दोषी ठहराया। आज लोग इस बात को क्यों नहीं समझते कि हमें उपासना के लिये नये नियम में दी गई शिक्षाओं का पालन करना आवश्यक है? हमें पीछे मुड़कर पुराने नियम के नियमों के बारे में नहीं सोचना चाहिए जो अब हम पर लागू नहीं है, भले ही कुछ लोगों को उनको करने में आनन्द मिलता हो।

मूसा ने दूसरी चट्टान पर पाप किया क्योंकि परमेश्वर की आज्ञाएं बदल गई थी और मूसा उन नई आज्ञाओं का पालन करने में असफल रहा। जो आज्ञाएं हमें दी जाती है और हम उन्हें मानने में असफल हो जाते हैं तो हम पाप करते हैं।

मूसा ने दूसरी चट्आन पर पाप किया जब उसने चट्टान पर लाठी से मारा क्योंकि उसका यह कार्य विश्वास का कार्य नहीं था। यहोवा ने मूसा से कहा, "तूने जो मुझ पर विश्वास नहीं किया, और मुझे इस्राएलियों की दृष्टि में पवित्र नहीं ठहराया, इसलिये तू इस मण्डली को उस देश में पहुंचाने न पाएगा जिसे मैंने उन्हें दिया है।" (गिनती 20:12)

जब हमारी उपासना विश्वास से नहीं होती तो हम पाप करते हैं।

विश्वास सुनने से आता है, और सुनना मसीह के वचन से होता है। परमेश्वर के वचन में मूसा के लिये यह नहीं कहा गया है कि तू चट्टान को मार। मूसा ने वह किया जिसको करने की आज्ञा उसको नहीं दी गई थी, और जो आज्ञा दी गई थी उसको मानने में वह असफल रहा। इस कारण से मूसा ने पाप किया उसका अविश्वास उसका परमेश्वर की आज्ञा का पालन न करना, बिना अनुमति के किया गया और अनुपयुक्त रीति से किया गया कार्य इस सब के परिणामस्वरूप वह परमेश्वर की महिमा करने में असफल रहा।

उपासना से संबंधित परमेश्वर का वचन जो हम पर आज लागू होता है, वह हमें वाद्य यंत्रों का उपयोग करने की इज्जाजत नहीं देता; इसलिये यदि हम वाद्य यंत्रों को उपासना में जोड़ते है तो हम पाप करते हैं।

पाप का चाहे जो भी रूप हो, यह सदैव उद्धार का विषय है।

(अनुवादक - भाई फ़ैरल)

आवश्यक यह नहीं कि आपने कैसे आरंभ किया

जिमी कलार्क

"परन्तु जब धर्मी अपने धर्म में फिरकर टेढ़े काम वरन दुष्ट के सब घृणित कामों के अनुसार करने लगे, तो क्या वह जीवित रहेगा? जितने धर्म के काम उसने किए हो, उनमें से किसी का स्मरण न किया जाएगा। जो विश्वासघात और पाप उसने किया हो, उसके कारण वह मर जाएगा।" यहेजकेल (18:24)

"जब वे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की पहचान के द्वारा संसार की नाना प्रकार की अशुद्धता से बच निकले, और फिर उनमें फंसकर हार गए तो उनकी पिछली दशा पहली से भी बुरी हो गई है।

क्योंकि धर्म के मार्ग का न जानना ही उनके लिये भला होता कि उसे जानकर, उस पवित्र आज्ञा से फिर जाते जो उन्हें सौंपी गई थी।" (2 पतरस 2:20, 21)

बाइबल में दिये गए कुछ उधारणों पर विचार करें और देखें कि कुछ लोगों ने आरंभ तो विश्वास से किया पर अन्त में स्थिर न रहने के कारण अपने विश्वास से गिर गए।

1. राजा शाऊल जो राजनीति की विचारधारा का व्यक्ति था : कीश के पुत्र शाऊल ने बड़ी नम्रता से अपना कार्य आरंभ किया और प्रारंभ में वह परमेश्वर का एक महान सेवक रहा। जब शमूएल उसको राष्ट्र के सामने पेश कर रहा था, तो शाऊल के बारे में ऐसा लिखा है, "तब उन्होंने फिर यहोवा से पूछा, 'क्या यहां कोई और आने वाला है?' यहोवा ने कहा, सुनो वह सामान के बीच में छिपा हुआ है।" (1 शमूएल 10:22)

शाऊल को अम्मोनियों पर जो गिलदाद के यावेश के विरूद्ध विजय मिली, उसमें वह विश्वसनीय रहा। परन्तु समय के साथ शाउल ने अपना उत्तरदायित्व न समझ कर,

राजा होने के अधिकार का दुरूपयोग किया।

उसने यहोवा की आज्ञा के विरूद्ध पाप किया और शमूएल से कहा, "मैंने तो पाप किया है, तौभी मेरी प्रजा के पुरनियों और इस्राएल के सामने मेरा आदर कर और मेरे साथ लौट कि मैं तेरे परमेश्वर यहोवा को दण्डवत करूं।" (1 शमूएल 15:30)।

शाऊल दाऊद को, जो एक विश्वसनीय सेवक था, कई बार मारने की योजना का प्रयास दिखाता है कि उसका हृदय धार्मिकता की ओर से फिर कर बगावत की ओर परिवर्तित हो गया था।

यह बड़ी दुखद घटना है कि एक समय एक होनहार नेता के रूप में जाने वाले शाऊल का अन्त इतना भयानक हुआ, "तब शाऊल ने अपने हथियार ढोने वाले से 'अपनी तलवार खींचकर मुझे भोंक दे, ऐसा न हो कि वे खतनारहित लोग आकर मुझे भोंक दे और मेरा ठट्ठा करें।' परन्तु उसके हथियार ढोने वाले ने अत्यंत भय खाकर ऐसा करने से इंकार किया। तब शाऊल अपनी तलवार खड़ी करके उस पर गिर पड़ा।" (1 शमूएल 31:4)

शाऊल का आरंभ उसके अंत से बहुत महान था।

2. कपटी हनन्याह और सफ़ीरा: यरूशलेम की कलीसिया कुछ विषयों के प्रति काफी सुदृढ़ निश्चय की थी- वहां कोई समझौते की गुंजाइश नहीं थी। लूका ने लिखा, "विश्वास करने वालों की मण्डली एक चित्त और एक मन की थी, यहां तक कि कोई भी अपनी सम्पत्ति अपनी नहीं कहता था, परन्तु सब कुछ साझे में था।" (प्रेरितों 4:32)

बरनबास नामक व्यक्ति ने एक अच्छा उधारण रखा, "यूसुफ नाम साईप्रस का एक लेवी था। जिसका नाम प्रेरितों ने बरनबास (अर्थात शांति का पुत्र) रखा था। उसकी कुछ भूमि थी, जिसे उसने बेचा, और दाम के रुपये लाकर प्रेरितों के पांव पर रख दिए।" (प्रेरितों 4:36-37)

हनन्याह और सफ़ीरा ने यह दर्शाया कि कलीसिया में कुछ सांसारिक प्रवृत्ति के लोग भी थे। (प्रेरितों 5:1-11) सफ़ीरा की मृत्यु होने से पहिले पतरस ने उससे कहा, "यह क्या बात है कि तुम दोनों ने प्रभु की आत्मा की परीक्षा के लिये एका किया? देख, तेरे पति के गाड़ने वाले द्वार पर ही खड़े हैं, और तुझे भी बाहरी ले जाएंगे।" (प्रेरितों 5:9) इन दोनों के जीवन से यह उधारण देखने में आता है कि हृदय परिवर्तन लालच में बदल गया।

3. संसार को प्रिय जानने वाला देभास: पौलुस का एक सहकर्मी था जिसकी गिनती विश्वासियों के साथ कार्य करने में की जाती थी। पौलुस ने कुलुस्सियों की कलीसिया के भाईयों को लिखा, "प्रिय वैद्य लूका और देभास का तुम्हें नमस्कार।" (कुलुस्सियां 4:14)

पौलुस ने फिलोमोन को लिखा, "और मरकुस और अरिस्तर्खुस और देमास और लूका जो मेरे सहकर्मी है, इनका तुझे नमस्कार।" (फिलोमोन 24) इस सब के बावजूद पौलुस ने बाद में तीमुथियुस को लिखा, "क्योंकि देमास ने इस संसार को प्रिय जानकर मुझे छोड़ दिया है और थिस्सलुनीके को चला गया है।" (2 तीमुथियुस 4:10) यह आखरी बात है जो उसके बारे में नये नियम में कही गई है।

इस कारण सदैव इस बात को स्मरण रखना होगा कि केवल ये ही महत्वपूर्ण नहीं

है कि हम आरंभ कैसे करते हैं; परन्तु आवश्यक यह है कि अन्त तक अपने विश्वास में स्थिर रहें तब ही हम जीवन का मुकुट पाएंगे, "...प्राण देने तक विश्वासी रह तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा।" (प्रकाशितवाक्य 2:10)।

(अनुवादक -भाई फ़ैरल)

काब्रिस्तान में सब से बड़ी समाधि शिला

चार्लस बॉक्स

हम में से किसी के लिये भी मृत्यु और कब्रिस्तान कोई अनजानी बात नहीं है। वर्षों से हमारे परिवार के लोग, मसीही भाई बहन, पड़ोसी और मित्रों की मृत्यु होती रही हैं और एक संगे संबंधी की मृत्यु हो जाना बड़े ही दुख की बात है। एक दिन सब की तरह हमारी भौतिक देह की भी मृत्यु हो जाएगी; यद्यपि भौतिक मृत्यु हमारा अन्त नहीं है। जब हमारी भौतिक देह मर जाती है उस समय हमारी आत्मा नहीं मरती।

किसी मृतक के अंतिम संस्कार में भाग लेना या कब्रिस्तान में जाना हमें स्पष्ट तौर से याद दिलाता है कि एक दिन हम सब को मृत्यु का सामना करना है, जो उस अभिशाप के कारण जो सारी मनुष्य जाति पर आ गया था जब आदम और हव्वा ने परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह किया। (उत्पत्ति 3 अध्याय)

मृत्यु एक सच्चाई है; ऐसा नहीं है कि यह एक काल्पनिक योजना है।

सुलेमान ने लिखा, "फिर मैंने धरती पर देखा कि न तो दौड़ में वेग दौड़ने वाला और न युद्ध में शूरवीर जीतते, न बुद्धिमान लोग रोटी पाते न समझ वाले धन, और न प्राणियों पर अनुग्रह होता है; वे सब समय और संयोग के वश में है। क्योंकि मनुष्य अपना समय नहीं जानता। जैसे मछलियां दुखदाई जाल में और चिड़ियें फंदे में फंसते हैं, वैसे ही मनुष्य दु:खदाई समय में जो उन पर अचानक आ पड़ता है, फंस जाते हैं।" (समोपदेशक 9:11, 12)

हर एक मनुष्य को मृत्यु का सामना करना है। एक कब्रिस्तान में एक बहुत बड़ी समाधिशिला (कब्र के सिरहाने खड़ा किया गया पत्थर जिसपर द्विगंत व्यक्ति का नाम तिथी आदि अंकित होते हैं) देखने में आया इस कब्रिस्तान में यह सब से बड़ा था; तो भी सत्य यह है कि कब्रिस्तान में सबसे बड़ी समाधि शिला लगवाना परमेश्वर के साथ एक सर्वोत्तम संबंध की गारंटी नहीं करता। कब्रो को सुन्दर बनाना या अच्छी समाधि शिला बनवाना कुछ नया नहीं है।

बाइबल में जिस पहली मृत्यु का वर्णन मिलता है वह एक हत्या थी।

"तब कैन ने अपने भाई हाबिल से कुछ कहा, और जब वह मैदान में थे, तब कैन ने अपने भाई हाबिल पर चढ़कर उसे घात किया।" (उत्पत्ति 4:8)

उस दिन के बाद से कब्रिस्तान का बनना, कब्रों का बनाना; कब्रों पर समाधि शिला लगाना या सजाना संवारना का कार्यक्रम आरंभ हो गया।

सारा को मकपेला वाली भूमि की गुफा में जो मम्रे के अर्थात हेब्रोन के सामने कनान देश में है मिट्टी दी। (उत्पत्ति 23:19) राहेल को बैतलहम के मार्ग में मिट्टी

दी गई, "याकूब ने इसकी कब्र पर एक खम्बा खड़ा किया, राहेल की कब्र का वह खम्बा आज तक बना है।" (उत्पत्ति 35:20)

पहला राजा 13:30 में हम उस युवा परमेश्वर के जन की कब्र को देखते हैं, जिससे एक बूढ़े नबी ने झूठ बोला और धोखा दिया और बाद में उसकी हत्या हो गई। उसकी कब्र पर अच्छे शब्दों में उसके बारे में अंकित किया गया और बूढ़े नबी ने उसकी कब्र को अच्छे से बनवा दिया।

यीशु के शव को अरिमतिया के युसुफ ने लिया, उसे उज्जवल चादर में लपेटा और उसे अपनी नई कब्र में रखा, जो उसने चट्टान में खुदाई थी, और कब्र के द्वार पर बड़ा पत्थर लुढ़का कर चला गया। (मत्ती 27:57-60) एक पुरुष या स्त्री जो सब के प्यारे हो उनके लिये कब्रिस्तान में सबसे बड़ी समाधि शिला बनवाना बहुत बढ़िया बात है। जब परिवार के सदस्यों से प्यार किया जाता है, उनका आदार सम्मान किया जाता है, उनकी सराहना की जाती है, तो उनकी मृत्यु के पश्चात उनके लिये बढ़िया से बढ़िया कब्र भी बनाई जाती है। परन्तु कृपया इस बात को न भूलें कि अंतिम सुन्दर कबरें और बड़ी-बड़ी समाधि शिलाएं यह सब उनके लिये हैं जो जीवित है। जो इस संसार से चले गए उनके लिये नहीं है। जब हमारे परिवार के सदस्य जीवित है, तब उनसे प्रेम करे; उनको आदर सम्मान दें, उनकी सेवा करें ताकि उनको मालूम हो कि आप उनकी परवाह करते हैं और उसके स्वभाव और व्यवहार से वह आशिषित हो। इसी नियम के अनुसार यूहन्ना भी कलीसिया को प्रोत्साहित करता है कि एक दूसरे से प्रेम, रखो और कलीसिया परिवारों को आपस में भाईचारे की प्रीति रखने के लिये प्रोत्साहित करे। यूहन्ना ने लिखा, "क्योंकि जो समाचार तुमने आरंभ से सुना, वह यह है कि हम एक दूसरे से प्रेम रखें।" (1 यूहन्ना 3:11)

हमें अपने परिवारों को अपना प्रेम, जब वह जीवित है तब दर्शाना चाहिये। उन्हें इस बात से कोई मतलव नहीं कि उनकी मृत्यु के बाद आपने उनकी कब्र पर कितना बड़ा समाधि शिला लगवाया या हमारी कब्र को कितना सुन्दर बनवाया।

अगर हम भाईयों से प्रेम नहीं करते तो हमारा स्वर्ग में प्रवेश असंभव है। "हम जानते हैं कि हम मृत्यु से पार होकर जीवन में पहुंचे हैं, क्योंकि हम भाईयों से प्रेम रखते हैं। जो प्रेम नहीं रखता वह मृत्यु की दशा में रहता है। जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह हत्यारा है; और तुम जानते हो कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं रहता।" (1 यूहन्ना 3:14, 15)

ऐसा ही प्रेम हमें अपने परिवारों से भी करना चाहिये। कब्रिस्तान में सब से बड़ा समाधि शिला लगवाना इस बात की गारंटी नहीं करता कि हमारा संबंध परमेश्वर से सही है और न ही परिवारों के प्रति यह कोई प्रमाण है। एक पुरुष या स्त्री की कब्र पर एक बहुत बड़ा समाधि शिला इस कारण से भी हो सकता है कि परिवार के सदस्यों के दिलों में डर हो या वह अपने आपको अपराधी महसूस करते हो कि जब वह पुरुष या स्त्री जीवित हो तो हमने अनूठा अच्छे तरीके से ध्यान नहीं रखा।

यदि परिवार के प्रति हम अपना प्रेम दर्शाना चाहते हैं तो बहुत आवश्यक है कि हमारा रोज का व्यवहार सही हो। हमें अपने परिवार से प्रेम और विनम्रता से बात करनी चाहिए। अपने परिवार को प्रोतसाहित करना और उनका हौसला बढ़ाना हमारी रोज़ की

भाषा और व्यवहार का एक मुख्य अंग होना चाहिए। परिवार का प्रेम इस सब बातों के विपरीत है- "कड़वाहट, प्रकोप, क्रोध, कलह और निंदा।"

परिवार के प्रति हमारा व्यवहार - कृपालु, पाप "कोई गंदी बात तुम्हारे मुंह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही निकले जो उन्नति के लिये उत्तम हो, ताकि उससे सुनने वालों पर अनुग्रह हो। परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिससे तुम पर छुटकारे के दिन के लिये छाप दी गई है। सब प्रकार की कड़वाहट और प्रकोप और क्रोध और कलह और निंदा, सब बैरभाव समेत तुम से दूर की जाए। एक दूसरे पर कृपालु और करूणामय हो और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो।" (इफिसियों 4:29-32)

कब्रिस्तान में सबसे बड़ी समाधि शिला लगवाना इस बात की गारंटी नहीं करता कि परमेश्वर से हमारे संबंध सही है और न ही यह हमारी उस कमी को पूरा कर सकता है जब हम अपने परिवार के सदस्यों को प्रेम करने में असफल रहे। यह संभव है कि एक व्यक्ति कब्रिस्तान में सबसे बड़ी समाधि शिला बनवा ले, तो भी प्रश्न समाधि शिला के बड़े होने का नहीं है, परन्तु इस बात का है कि उसका संबंध परमेश्वर के साथ कितना गहरा है? यह वास्तविकता कि हम मसीह की दुलहन हैं, इस बात को दर्शाता है कि हमारा मसीह के साथ एक गहरा और स्थायी संबंध होना चाहिए। मसीही लोग पूरी तरह से मसीह के साथ एक हो जाते हैं, "कि वे सब एक हो, जैसे तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हो, जिससे संसार विश्वास करे कि तू ही ने मुझे भेजा है। वह महिमा जो तूने मुझे दी मैंने उन्हें दी है, कि वे वैसे ही एक हो जैसे कि हम एक हैं, मैं उनमें और तू मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएं और संसार जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तूने मुझसे प्रेम रखा वैसा ही उनसे प्रेम रखा।" (यूहन्ना 17:21-23)

यह संबंध मसीह के साथ इतना घनिष्ट है कि हमें अपना जीवन मसीह के सदृश्य और उसकी छवि के अनुसार जीना चाहिए। बाईबल हमें बताती है, "परमेश्वर के निकट आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा।" (याकूब 4:8)

मसीह के साथ तुम्हारा संबंध यह अपेक्षा करता है कि प्रति दिन हमारा ध्यान परमेश्वर पर केन्द्रित हो।

"जिसका मन तुझमें धीरज धरे हुए है, उसमें तू पूर्ण शांति के साथ रहता है, क्योंकि वह मुझ पर भरोसा रखता है।" (यशायाह 26:3)

यदि मैं किसी से कहूं कि मैं एक मसीही हूं तो यह बात परमेश्वर के साथ मेरे संबंध का वर्णन करनी चाहिए। जो मसीही हैं उनका एक मजबूत संबंध प्रभु के साथ बना रहता है।

"क्या तुम नहीं जानते कि जिसकी आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आप को दासों के समान सौंप देते हो उसी के दास हो: चाहे पाप के, जिसका अंत मृत्यु है, चाहे आज्ञाकारिता के, जिसका अन्त धार्मिकता है।" (रोमियों 6:16)

कब्रिस्तान में सबसे बड़ी समाधि शिला लगवाना इस बात की गारंटी नहीं करता कि परमेश्वर से हमारा संबंध सही है।

कब्रिस्तान में एक सब से बड़े समाधि शिला के होने का हमारे उद्धार से कोई

संबंध नहीं है। आपके लिये यह एक बड़ी आशीष की बात होगी कि आप किसी कब्रिस्तान में एक ऐसी कब्र में गाड़े जाएं जिस पर कोई समाधि शिला आदि न हो, परन्तु आप स्वर्ग में प्रवेश करें बजाए इसके कि एक ऐसी कब्र में गाड़े जाएं जिस पर बहुत बड़ी समाधि शिला तो लगा हो पर आप नरक में जाएं। यीशु का बहुमूल्य लहू ही पाप की समस्या का एक बड़ा समाधान है।

"परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों 5:8) एक मसीही होने के लिये यह आवश्यक है कि आप सुसमाचार को सुनें (रोमियों 10:17), यीशु पर विश्वास लाएं (यूहन्ना 8:24), पापों से मन फिराएं (प्रेरितों 17:30), इस बात का अंगीकार करें कि मसीह जीवते परमेश्वर का पुत्र है। (मत्ती 16:16), यीशु के नाम से बपतिस्मा ले (गलतियों 3:26, 27)

उद्धार पाने के लिये बाइबल का केवल यह ही एक रास्ता है। इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं जिसके द्वारा परमेश्वर और मनुष्यों में शांति बनाई रखी जा सके। पापों की क्षमा के लिये, केवल यीशु की मृत्यु ही एक मार्ग है। यदि हम उद्धार पाना चाहते हैं तो यह आवश्यक है कि हम यीशु के लहू के सम्पर्क में आएं।

(अनुवादक -भाई फ़ैरल)

नबियों की हत्या करना

जैक डब्ल्यू कार्टर

यिर्मयाह नबी के बारे में पढ़ने पर हमें पता चलता है कि यह सचमुच में बाइबल के इतिहास का एक महत्वपूर्ण काल है। यह यहूदा के लोगों के लिए था और यह परमेश्वर के लोगों की अगली हर पीढ़ी के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश लाता है।

यिर्मयाह एक अनिच्छुक नबी था। वह रोता हुआ नबी था। वह एक नाराज नबी बन गया और अंत में उसने परमेश्वर से लोगों को दण्ड देने को कहा क्योंकि वे परमेश्वर के संदेश का विरोध करने के लिए इतने हठी और संदेश लाने वाले की हत्या करने को इतने उतावले थे। इस संबंध में मनुष्य का स्वभाव मुझे बड़ा ही दिलचस्प लगा है। अपने लोगों के साथ सदियों से व्यवहार करते हुए परमेश्वर ने अपनी इच्छा को प्रकट करने के लिए नबियों को इस्तेमाल किया। ज्यादातर लोगों ने परमेश्वर की ओर से मिले संदेश को माना नहीं, जिस कारण उन्होंने संदेश लाने वालों को ही आमतौर पर मार डालना चाहा।

क्या संदेश पहुंचाने वाले हत्या करने से संदेश बेअसर हो जाना था? क्या इससे संदेश का प्रभाव बदल जाना था? क्या यह मानने में आता है कि संदेश देने वाले की हत्या करने से कुछ लाभ हो सकता है? इसका एकमात्र उत्तर जो मुझे मिला है, उसके दो भाग हैं। सबसे पहले तो यदि संदेश वह नहीं है जो लोग सुनना चाहते हैं, तो वे स्वयं को यह यकीन दिलाने की कोशिश करेंगे कि संदेश असल में परमेश्वर की ओर से है ही नहीं। जैसा कि यिर्मयाह (और बहुत से अन्य नबियों) के समय में हुआ, लोगों

ने उन नबियों को जिन्होंने परमेश्वर की ओर से बोलने का दावा किया था, और वे जिनका संदेश अधिक स्वीकार्य था। यह कभी बदला नहीं है। दूसरा, ऐसा करने के बावजूद लोगों को अंदर ही अंदर यह पता होता था कि असली संदेश क्या है। केवल वे उसे मानना नहीं चाहते थे और यकीनन वे नहीं चाहते थे कि कोई उन्हें इसे याद भी दिलाए। यह तो ऐसा था जैसा "अब परमेश्वर का सामना करो और क्या पता कि बाद में होने वाले परिणामों से बच जाएं।"

संदेश देने वाले को मार डालना किसी भी प्रकार से समझदारी का काम नहीं है। इससे कोई उद्देश्य पूरा नहीं होता और न ही किसी को कोई लाभ होता है। संदेश देने वाला परमेश्वर की बात को उसके लोगों के पास पहुंचाने के लिए केवल मध्यस्थ है। हमारा ध्यान संदेश से ही खिंचना चाहिए।

देखिए, संदेश देने वाले के साथ जो भी हो जाए, संदेश कभी बदलता नहीं है। सैंकड़ों, हजारों संदेश देने वालों की हत्या की जा चुकी है पर इससे संदेश कभी नहीं मरेगा। अंत के अदन में यही हमारा न्याय करेगा।

परमेश्वर की इच्छा और मनुष्य के विचार

डालटन की

परमेश्वर का वचन और मनुष्य के विचारों में कभी मेल नहीं होता। देखें मनुष्य कहता है, "परमेश्वर के लिए प्रेम जरूरी है, आज्ञाओं का मानना नहीं।" 1 यूहन्ना 5:3 में परमेश्वर बताता है, "परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें, और उसकी आज्ञाएं कठिन नहीं।" फिर यीशु ने यह स्पष्ट किया, "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे" (यूहन्ना 14:15)।

मनुष्य कहता है, "एक कलीसिया दूसरी कलीसिया के जैसी ही अच्छी है। अपनी पसंद की कलीसिया में शामिल हो जाओ।" अपने पुत्र के द्वारा बात करते हुए परमेश्वर ने केवल एक कलीसिया को बनाने का वचन दिया (मत्ती 16:18)। परमेश्वर का वचन इस कलीसिया को मसीह की देह कहता है (इफिसियों 1:22-23) और दावा करता है कि "एक ही देह है" (इफिसियों 4:4)।

मनुष्य कहता है, "बपतिस्मा जरूरी हो सकता है, पर उद्धार से इसका संबंध नहीं है।" परमेश्वर का वचन कहता है "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा" (मरकुस 16:16)। और फिर 1 पतरस 3:21 में से कि "बपतिस्मा.... अब तुम्हें बचाता है।"

मनुष्य कहता है, "परमेश्वर प्रेम है, और प्रेमी परमेश्वर किसी को नाश नहीं होने देगा।" परमेश्वर सब लोगों के प्रति अपने प्रेम की पुष्टि करता है (1 यूहन्ना 4:16; यूहन्ना 3:16), परन्तु उसने उस समय का भी वचन दिया है जब "प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा, और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा" (2 थिस्सलुनीकियों 1:7, 8)।

मनुष्य कहता है, "परमेश्वर की आराधना हमारा निजी मामला है। हमें वचन की आवश्यकता नहीं है कि हम कैसे आराधना करें? जब तक हमारा मन साफ है हम जैसे भी आराधना करें वह स्वीकार्य है।" परमेश्वर का वचन बताता है, "परन्तु वह समय आता है, वरन अब भी है, जिसमें सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करें, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही आराधकों को ढूंढ़ता है। परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करने वाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें" (यूहन्ना 4:23, 24)। और "सत्य" क्या है? पिता से प्रार्थना करते हुए यीशु ने कहा, "सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है" (यूहन्ना 17:17)।

मेरा सवाल यह है कि हम मनुष्य की सनकों के आगे हार मान लेंगे या फिर परमेश्वर की इच्छा को मानेंगे?

परमेश्वरत्व का महत्व

जैरी बेट्स

परमेश्वरत्व की शिक्षा मसीहियत की सबसे विवादस्पद और वाद-विवाद वाली शिक्षाओं में से एक है, फिर भी यह सबसे बुनियादी शिक्षा है। इसमें हैरानी नहीं होनी चाहिए कि परमेश्वर को समझना हमें कठिन लगता है, क्योंकि हम अपने सीमित मनों से असीमित परमेश्वरत्व को समझने की कोशिश कर रहे होते हैं। फिर भी यह आवश्यक है कि मसीही लोगों को इस महत्वपूर्ण शिक्षा की समझ हो। परमेश्वरत्व की शिक्षा का अर्थ यह है कि पिता परमेश्वर, पुत्र यीशु और पवित्र आत्मा तीनों, ईश्वरीय हैं पर वे तीन परमेश्वर नहीं है, बल्कि एक परमेश्वर है।

"क्या परमेश्वरत्व की शिक्षा से कोई फर्क पड़ता है?" फिर हम यीशु और पवित्र आत्मा के ईश्वरीय होने के बाइबल के परिणाम को देखेंगे। अंत में हम इस प्रश्न का अध्ययन करेंगे कि "क्या परमेश्वरत्व की शिक्षा का कोई मतलब है?"

कुछ लोग इस शिक्षा को छोड़ क्यों देना चाहते हैं?

कुछ लोगों तो कहेंगे कि इस शिक्षा से असल में कोई खास फर्क नहीं पड़ता। उनकी नजर में यदि परमेश्वरत्व सच न भी हो तो नैतिक तर्क नहीं बदलेगा। ज्यादातर साहित्य में बहुत कम बदलाव होगा। व्यावहारिक तौर पर बहुत से मसीही लोगों को किसी प्रकार से परमेश्वरत्व की शिक्षा की असल में कोई समझ नहीं है, तो फिर इससे क्या फर्क पड़ता है? जिस पैमाने से बहुत से लोग सच्चाई का फैसला करते हैं वह यह है कि "यह मेरे लिए क्या करती है?" अन्य शब्दों में यदि यह मेरे लक्ष्य या उद्देश्यों तक पहुंचने में सहायक नहीं है तो इसे छोड़ देना चाहिए या नजरअंदाज कर देना चाहिए। इस प्रकार से बहुत से मसीही लोगों के अनुसार यह शिक्षा बांटती भी हैं, इसलिए इसे छोड़ दिया जाना चाहिए। इन कारणों से बहुत से लोग यह कहेंगे कि व्यावहारिक तौर पर व्यक्ति पर परमेश्वरत्व का बहुत कम फर्क पड़ता है इसलिए इसका इतना महत्व नहीं है।

कुछ हद तक परमेश्वरत्व में विश्वास को निकालना सामान्य रूप में मसीहियत को फिर से परिभाषित करने को दिखाता है। आज के समय में धर्म में आमतौर पर भावनाओं पर या कुछ सामाजिक परिस्थितियों में जिन में हम रह रहे होते हैं, धर्म के प्रभाव पर जोर

दिया जाता है। दोनों ही बातों में उन परिस्थितियों के लिए परमेश्वरत्व अप्रासंगिक है, इस कारण एक बार फिर बहुत से लोग इस पर जोर देंगे कि इस शिक्षा को छोड़ दिया जाए।

अन्य धर्मों के साथ झगड़े और ठट्ठे का मुख्य कारण परमेश्वरत्व की शिक्षा भी है। अन्य धार्मिक शिक्षाएं आम तौर पर मसीही व्यक्ति पर बहु ईश्वरवादी होने का आरोप लगाएंगी, क्योंकि हम परमेश्वरत्व में विश्वास रखते हैं जिनका उनके अर्थ से तीन ईश्वरों को मानना है। बेहतरीन अर्थ में यह शिक्षा एक पहेली जैसी है जबकि सही अर्थ में यह स्पष्ट विरोधाभास है। परमेश्वरत्व झगड़े का एक मुख्य कारण है इसलिए बहुत से लोग इसे फिर से फूट डालने वाली ऐसी शिक्षा को छोड़ देने को कहेंगे।

परमेश्वरतत्व का महत्व

परन्तु यह शिक्षा छोटी या महत्त्वहीन नहीं है। क्योंकि यह परमेश्वर के स्वभाव को बताती है। परमेश्वरत्व का एक पहलू परमेश्वर का देहधारी होना यानी परमेश्वर का मनुष्य बनना है। मनुष्य आम तौर पर चकित होता है कि जब परेशानियों और मुश्किलें आती है तब परमेश्वर कहां होता है? देहधारी होना इस बात को दिखाता है कि परमेश्वर संसार की तकलीफों के प्रति उदासीन नहीं है, बल्कि वह इसे बचाने के लिए संसार का भाग बन गया। यह शिक्षा के कसूर तीसरे पक्ष को दण्ड देने के काल्पनिक अनैतिक प्रबंधन को भी निकाल देती है। यदि यीशु परमेश्वरत्व का भाग है तो वह अनिच्छा से बलिदान नहीं हुआ था। इसके अलावा परमेश्वरत्व मसीहियत को अन्य धर्मों से अलग करता है। हमारे बहुवादी धार्मिक समाज में बुनियादी तौर पर सभी धर्मों को बराबर माना जाता है, और उनके बीच के अंतरों को मान लेना और नजरअंदाज किया जाना चाहिए। परन्तु परमेश्वरत्व ऐसे विश्वास को असंभव बना देता है। परमेश्वरत्व को अन्य धर्मों में नहीं मिलाया जा सकता। यह विलक्षण है।

आमतौर पर मसीही लोगों में इस प्रश्न पर चर्चा होती है कि किससे प्रार्थना करनी चाहिए। बाइबल हमें केवल परमेश्वर पिता को छोड़ किसी और से प्रार्थना करने की आज्ञा कहीं नही देती। इसलिए हर प्रार्थना केवल परमेश्वर पिता से ही की जानी चाहिए। यह तरीका परमेश्वरत्व के हर व्यक्ति के काम को पूर्ण रूप में अलग मानता है। परन्तु परमेश्वरत्व के विचार से यह पता चलता है कि कुछ काम चाहे परमेश्वरत्व के एक व्यक्ति का मुख्य काम हो सकते हैं, पर हर पहलू में वे तीनों शामिल होते हैं। मसीह के नाम में, परमेश्वर से की गई हमारी प्रार्थनाओं में पवित्र आत्मा सहायता करता है (रोमियों 8:26-27; यूहन्ना 15:16; 16:23)। इसलिए हमारे परमेश्वर पिता से प्रार्थना करने के समय, प्रार्थनाओं का उत्तर देने में सभी शामिल होते हैं और यह बात हमें परमेश्वरत्व के अलग-अलग सदस्यों के काम में इतने स्पष्ट विभाजन पर सवाल करने को बाध्य करती है। हमारी प्रार्थनाएं और आराधना केवल परमेश्वर पिता के बजाय त्रिएक परमेश्वर के सामने होती हैं।

क्या हमारा एक-दूसरे को जोड़ने का ढंग परमेश्वरत्व पर निर्भर है?

परमेश्वरत्व इस बात के लिए नमूना बन जाता है कि हम उन्हें एक-दूसरे से कैसे जोड़ें। परमेश्वरत्व के तीनों सदस्य सदा के समान हैं। एक और पाठ में हम कुछ वचनों पर चर्चा करेंगे, जो यीशु के मातहत होने का संदेश देते हैं, परन्तु इतना कहना काफी है कि यीशु के किसी भी प्रकार के मातहत होने को पृथ्वी पर उसके देहधारण करने के भाग के रूप में माना जाए न कि अनन्त अर्थ में। यीशु ने कहा कि जैसे वह और पिता एक है, वैसे ही हम भी एक हों (यूहन्ना 17:11, 21)। इस प्रकार परमेश्वरत्व की एकता और एक होने की समझ यह समझने के लिए आवश्यक है कि उसके चेलों के रूप में हम एक कैसे हो

सकते हैं।

सबसे पहले तो हर मसीही को बराबर महत्व के माना जाना चाहिए। बेशक बहुत से लोगों के अलग-अलग गुण, योग्यताएं और काम होते हैं परन्तु फिर भी परमेश्वर की नजर में हमारा मूल्य और महत्व एक सा है। "और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को पहिन लिया है" (गलातियों 3:27)। इसलिए किसी भी परिस्थिति में जहां एक सदस्य किसी दूसरे सदस्य पर हावी होता है या किसी सदस्य को किसी प्रकार से कम महत्व का माना जाता है तो यह गलत हैं जिस कलीसिया में कोई एक व्यक्ति या समूह दूसरों की आवश्यकताओं, परिस्थितियों या इच्छाओं की अनदेखी करता है, वहां बहुत सी समस्याएं खड़ी हो जाती हैं और सत्ता संघर्ष होने लगता है। आपको परमेश्वर के बीच किसी प्रकार का सत्ता संघर्ष नहीं मिलेगा, इसका अर्थ यह हुआ कि कलीसिया में भी ऐसी परिस्थिति नहीं आनी चाहिए।

दूसरा, किसी भी व्यक्ति को किसी दूसरे से बढ़कर ऊंचा न किया जाए। स्पष्ट है कि मण्डली के प्रचारक या अगुओं जैसे कुछ सदस्यों की दूसरों से प्रमुख भूमिका होती है। कइयों में अधिक गुण या योग्यताएं होती हैं और कलीसिया में उसके सार्वजनिक योगदान को बड़ा माना जा सकता है। उनकी अधिक आर्थिक प्राप्तियों के कारण कुछ लोग दूसरों से बढ़कर दे सकते होते हैं। ऐसी परिस्थितियों में कुछ खास लोगों को दूसरों से बढ़कर महत्व देने की मानवीय प्रवृत्ति स्वाभाविक है। परन्तु परमेश्वर की नजर में यह सही नहीं है। दो उदाहरणों पर विचार किया जा सकता है, जैसे वह निर्धन विधवा जिसने केवल दो दमड़ियां दी थी, इसके बावजूद यीशु ने उसकी प्रशंसा की और कहा कि उसने दूसरों से बढ़कर दिया था। याकूब 2 में याकूब पक्षपात दिखाने या उन धनवानों को जो हमारी मण्डलियों में आ सकते हैं, अधिक सम्मान देने को गलत बताता है। परमेश्वर किसी भी बाहरी भेद के बावजूद जो हमारे समाज में पाया जा सकता है हर मसीही को गुण और महत्व में बराबर मानता है, और हमें भी वैसा ही मानना चाहिए।

इसके अलावा 1 कुरिन्थियों 12 में पौलुस कलीसिया को शारीरिक देह के साथ मिलाता है। जिस प्रकार शारीरिक देह में बहुत से अंग होते हैं और हर अंग का अलग-अलग काम होता है, वैसे ही कलीसिया के भी बहुत से सदस्य यानी अंग होते हैं और हर सदस्य का अलग काम होता है। फिर भी कमजोर सदस्यों को गैर-जरूरी नहीं माना जाना चाहिए बल्कि हर सदस्य को मिलकर देह की एकता और उन्नति के लिए काम करना चाहिए। शारीरिक देह में भी यदि केवल एक छोटा सा अंग सही ढंग से काम नहीं करता तो हम नहीं मानते कि देह स्वस्थ और सेहतमंद है। इसी प्रकार से कलीसिया भी जिसमें सभी सदस्य एक नहीं है और उन्हें बराबर महत्व नहीं मिलता तो उसे स्वस्थ और सेहतमंद नहीं माना जाना चाहिए।

यही नियम मण्डलियों के बीच संबंधों में भी देखा जा सकता है। बहुत बार एक मण्डली का काम किये बिना इस विचार के किया जाता है कि दूसरे कामों या मण्डलियों पर इसका क्या प्रभाव पड़ सकता है। कलीसियाएं आमतौर पर एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करती हैं जिसमें हर मण्डली दूसरे से बड़ा होने की कोशिश करती है। बेशक आगे बढ़ने की कोशिश करने में कोई बुराई नहीं है पर हमें दूसरी मण्डलियों का ध्यान रखना आवश्यक है। मसीहियत कारोबार में प्रतिस्पर्धा नहीं है जिसमें छोटे कारोबारी आमतौर पर बड़े कारोबारियों द्वारा दबा दिए जाते हैं, और बेशक कुछ लोग इससे दुखी हो सकते हैं पर हमें ऐसी परिस्थिति को स्वाभाविक और सामान्य मानना चाहिए। कलीसियाओं को केवल अपने

उपयोग के लिए रखने के बजाय अपने संसाधनों का इस्तेमाल दूसरों की सहायता के लिए करना चाहिए। हम ऐसे दृश्य की कल्पना कभी नहीं कर सकते जिसमें परमेश्वरत्व का एक सदस्य दूसरे सदस्यों पर पड़ने वाले प्रभाव पर विचार किए बिना अपनी मनमानी करे। इसलिए जब हम परमेश्वरत्व पर विचार करेंगे तो मण्डलियां दूसरी मण्डलियों की भलाई का ध्यान रखेंगी।

यही नियम हमारे परिवारों में भी देखा जा सकता है। किसी भी सदस्य को परिवार में गैरजरूरी महत्व का नहीं माना जाता। किसी भी व्यक्ति को सुस्त होकर परिवार की भलाई में कम योगदान नहीं देना चाहिए। परमेश्वरत्व में सब एक हैं और एक ही उद्देश्य के लिए मिलकर काम करते हैं। इसलिए जब अपने जीवनों में हम परमेश्वर पर विचार करते हैं तो घर का हर व्यक्ति अपनी स्वार्थी इच्छाओं को पूरा करने के बजाय परिवार की बेहतरी के लिए मिलकर काम करता है।

तैयारी का महत्व (यूहन्ना 16)

ऍंडी क्लोर

"ये बातें मैं ने तुम से इसलिए कहीं कि तुम ठोकर न खाओ। वे तुम्हें अराधनालयों में से निकाल देंगे, बरन वह समय आता है, कि जो कोई तुम्हें मार डालेगा वह समझेगा कि मैं परमेश्वर की सेवा करता हूं। और यह वे इसलिए करेंगे कि उन्होंने न पिता को जाना है और न मुझे जानते हैं। परन्तु ये बातें मैंने इसलिए तुम से कहीं, कि जब उन का समय आए तो तुम्हें स्मरण आ जाए, कि मैंने तुम से पहिले ही कह दिया था, और मैं ने आरंभ में से तुम ये बातें इसलिए नहीं कहीं क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था। अब मैं अपने भेजने वाले के पास जाता हूं और तुम में से कोई मुझ से नहीं पूछता, कि तू कहां जाता है? परन्तु मैंने जो ये बातें तुम से कही हैं, इसलिए तुम्हारे मन शोक से भर गए। तौभी मैं तुम से सच कहता हूं, कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊंगा, तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा।" (आयतें 16:1-7)

प्रेरितों के साथ यीशु की चर्चाओं का एक उद्देश्य उन कठोर वास्तविकताओं के लिए तैयार करना था जो उनके सामने झूल रही थीं। उसके शब्द इस कहावत से मेल खाते हैं जिसका इस्तेमाल आज आमतौर पर किया जाता है, "चौकस होने का अर्थ हथियारबंद होना है।" अगले दिन प्रेरितों के उत्साह की परख होनी थी, पर अगले कई सालों तक ऐसा नहीं होना था। उन्हें समय के साथ-साथ दीर्घकालीन प्रोत्साहन की आवश्यकता थी। यीशु की मृत्यु और जी उठने में संसार को बल देना था और प्रेरितों को एक अलग भूमिका में रखना था। यह बातें होने पर शैतान ने मसीहियत के विनाश के लिए नये प्रयास किए (प्रकाशितवाक्य 12:17), जिसमें प्रेरितों ने नेतृत्व की एक नई स्थिति में कदम रखना था जिसकी वे कल्पना भी नहीं कर सकते थे।

यीशु को मालूम था कि उसके प्रेरितों के लिए उसकी बातें निराश करने वाली और उलझन में डालने वाली हैं। इस सच्चाई के बावजूद यह आवश्यक था कि वह उन्हें उन अंधकार भरे दिनों के लिए तैयार करे, जो शीघ्र ही उन पर आने वाले थे। उसे विशेष रूप में यह मालूम था कि वह अपने पिता के पास अपने जाने की बात करके उनके मैम्बरों को शोकित कर रहा था, पर उनके लिए एक साफ-साफ चर्चा थी।

जो कुछ उसने इन प्रेरितों से कहा वह तैयारी के मूल्य और महत्व में वह प्रकाशमान करता है। वह अपने नमूने के द्वारा हमें याद दिलाता है कि अंधकार के दिनों के लिए बिना तैयारी के किसी भी मसीही को भविष्य में जाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। अपनी पृष्ठभूमि के रूप में उसके शब्दों का इस्तेमाल करते हुए आगे देखते हैं कि विश्वास को बनाने और विश्वास को मजबूत करने के लिए उपयुक्त तैयारी की आवश्यकता थी।

मजबूती

पहले हम देखते हैं कि तैयारी हमें आने वाले कठिन समयों के लिए मजबूत करती है। यीशु ने कहा कि वह अपने चेलों के साथ बातचीत इसलिए कर रहा था कि परीक्षाएं आने पर उन्हें निराशा न हो :

"ये बातें मैंने तुम से इसलिए कहीं कि तुम ठोकर न खाओ। वे तुम्हें आराधनालयों में से निकाल देंगे, मार डालेगा वह समझेगा कि मैं परमेश्वर की सेवा करता हू। और यह वे इसलिए करेंगे कि उन्होंने न पिता को जाना है और मुझे जानते हैं।" (16:1-3)।

आने वाले दिनों में जब उन्हें सताव की आग का सामना करना था, चाहे यह उनके प्रियजनों द्वारा उनका बहिष्कार करना या जेलोतेसों के हाथों मृत्यु का सामना, उन्हें कहे गए यीशु के शब्दों ने उन्हें "ठोकर लगने" से बचाना था। यूहन्ना ने लिखा, "यीशु ने अपने मन में यह जानकर कि मेरे चेले आपस में इस बात पर कुड़कुड़ाते है उनसे पूछा, क्या इस बात से तुम्हें ठोकर लगती है?"

यीशु अपने प्रेरितों को हर आवश्यक जानकारी दे रहा था ताकि जब उनके ऊपर परीक्षाएं आएं तो वे चकित होकर दिल न छोड़ें। उन्होंने भविष्य में उस भाग के रूप में जो यीशु ने उनके लिए नापा था अपनी कठिनाइयों को समझना था। यही बात आज हमारे लिए सच है 2 तीमुथियुस 3:12 के अनुसार सताव वह लड़ाई जिसमें हर मसीही को जीतना है। परीक्षाओं का सामना होने पर हमें ठोकर नहीं खानी चाहिए क्योंकि पवित्र शास्त्र में हमें समय से पहले चिता दिया है कि वे आएंगी। परमेश्वर के वचन का अध्ययन हमें पक्का करता है ताकि इन परीक्षाओं से हम ठोकर न खाएं बल्कि मजबूत हो।

स्मरण

दूसरा, हम देखत सकते हैं कि तैयारी हमें अतीत में पाई गई आशिषों को याद रखने की स्थिति में रखती है। यीशु ने कहा कि वह उन्हें आने वाली इन कठिनाइयों के बारे में बता रहा है ताकि एक दिन उन्हें याद आए कि जब वह यहां था तो वह उनकी रक्षा कैसे करता था। उसने कहा, "परन्तु ये बातें मैंने इसलिए तुम से कहीं, कि जब उन का समय आए तो तुम्हें स्मरण आ जाए, कि मैंने तुम से पहिले ही कह दिया था, और मैंने आरंभ में तुम से ये बातें इसलिए नहीं कहीं क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था। अब मैं अपने भेजने वाले के पास जाता हूं और तुम में से कोई मुझ से नहीं पूछता, कि तू कहां जाता है? परन्तु मैंने जो ये बातें तुम से कही हैं, इसलिए तुम शोक से भर गए" (16:4-6)।

प्रेरितों को याद आना था कि उन्हें यह बताने के लिए उसकी और उनकी कौन प्रतीक्षा कर रहा है, उसने अपनी मृत्यु से पहले तक प्रतीक्षा की। इस समय तक वह उनकी ऐसी कठिनाइयों से रक्षा करने के योग्य रहा था। वह उन्हें वैसे प्रेरित बनाने की तैयारी करते हुए, जैसा वह चाहता था कि वे बनें उसने उन्हें भविष्य की बातें बताकर परेशान नहीं करना चाहा। बाद में जब उनके ऊपर कठिनाइयां आई तो उन्हें याद आया कि उसने उनके साथ रहते हुए किस प्रकार से कुछ परीक्षाओं में उनकी रक्षा की थी।

भविष्य के लिए उपयुक्त तैयारी होने पर, जो कुछ वह उसे देखकर हमें आनन्द करने का अवसर मिलेगा। हम याद कर सकते हैं कि हमें किस प्रकार से तैयार किया गया है या हम ने योजनाएं किस प्रकार से बनाई हैं ताकि उसके आने पर हम बेहतर और अधिक लाभदायक भूमिका निभा सकें। यह पीछे को देखना हमारे मनों को आशीषित करता है।

मसीह के इन्हीं शब्दों को बदलते हुए हम कह सकते हैं, "धन्य है वह व्यक्ति जिसका अतीत उदार और अनुग्रहकारी है कि कठिन और परेशानियों भरे भविष्य का सामना करने पर वह पीछे मुड़कर देख सकें।" मेरे डैड को जब यह समझ आने लगा था कि उनकी शारीरिक समस्याएं इतनी अधिक हैं कि वे अधिक देर तक जीवित नहीं रह सकते, तो उन्होंने कहा, "मैंने बड़ा, अच्छा जीवन निभाया है, उस सारे आनन्द के लिए जो मैंने लिया है मैं बड़ा आभारी हूं।" उन्हें पीछे मुड़कर देखने और पिछली बातों को याद करने के लिए शांति और सामर्थ मिलती है। प्रेरित भी उन से अलग नहीं थे। कठिन, भयंकर सताव के दिनों में भी उनका याद करना कि यीशु उनके साथ कितना अनुग्रहकारी था, उनके लिए शांति और स्थिरता देने वाला था।

तैयारी

तीसरा, यह स्पष्ट है कि तैयारी हमें आने वाली उन अच्छी बातों के लिए तैयार करती है। यीशु ने अपने प्रेरितों को बताया था कि उनके लिए पवित्र आत्मा पाने के लिए उसका उनसे दूर जाना आवश्यक है। उसने कहा, "तौभी मैं तुम से सच कहता हूं, कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊंगा तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा।" (16:7)।

यीशु इन प्रेरितों के लिए परमेश्वर की योजना को अंजाम दे रहा था। यह एक तेजस्वी और दूरगामी योजना थी। हां पीड़ा और सताव आने थे, उनके भविष्य में अलग प्रकार का जीवन और अलग जिम्मेदारियां थीं पर एक बड़ा अद्‌भुत "लाभ" अर्थात पवित्र आत्मा उन्हें मिलने वाला था।

हमें याद रखना चाहिए कि परमेश्वर सदैव वह परमेश्वर है जो हमारे आगे चलता है। वह न केवल यह बताता है कि हमें कहां जाना चाहिए और कया करना चाए बल्कि वह हमें उधर जाने में जहां हमें जाना है अगुआई भी करता है और उसे करने के लिए जो हमें शक्ति चाहिए वह भी देता है। जब हम कल वे चाहते हैं तो हमें मिलेगा कि परमेश्वर हमारे आने के लिए अपनी तैयारियों के साथ वहां पहले से है और हमारे लिये तैयार की गई भूमिकाओं को निभाने के लिए हमारी राह देख रहा है। उसने न केवल हमें परिस्थितियों के लिए तैयार किया है बल्कि उसने हमारे लिए परिस्थितियों को भी तैयार किया।

प्रेरितों के लिए बड़े तनाव के इस पल में यीशु ने उनके मनों में पवित्र आत्मा से भरे होने के का अच्छा विचार डाला। आत्मा की सामर्थ ने उन्हें वे सब बातें याद दिला देनी थी जो उन्हें बताई गई थी और उन नई सच्चाइयों को उनके दिमाग में डालना था जिन्हें जानने और सिखाने की उन्हें आवश्यकता थी (14:26)। इन प्रेरितों के लिए ये प्रतिज्ञाएं इतनी तसल्ली वाली थी और हमारे लिए ऐसे ही अहसास कितने ही तसल्ली देने वाले हैं। हम कल की चिंता क्यों करें? हम जानते हैं कि परमेश्वर इसमें हमारे साथ जाएगा और हम जानते हैं कि वह हमारे लिए काम का आधार बनाने के लिए पहले से वहां है। वह अपने मिशन को पूरा करने के लिए हमारी राह देख रहा है।